

DPN 5625

Title: गर्भगीता / GARBHA GĪTĀ

Run. No. 6316

Cat. No. 240

Micro. No.

Subject दर्शन Philosophy

Religion: Hindu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 16.5 x 7

Folios 6 Lines (in a page) 5

Compl. / Incompl.

(2, 17, 20-23)
Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script: New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material: palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

centimeter 5

10

15

20

25

15

10

5

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30



15

10

5

0

ॐ मि सा हा मो सा झो लो हं ॥ ८ ॥

ॐ मा नी वे नी हं ॥ ८ ॥

ॐ वा हं वा अ त हं वा सा सि च हं ॥

२४० अर्धशती ॥

ता प्राप्ति संसार विषयं धनं ॥ केन कर्म पुकारेन लोकान्मुच्य
त वं धनाम् ॥ ३ ॥ श्री भगवान् उवाच ॥ आत्मा कर्म परिन्त्यागि
निरस्य गृहे ते यदि ॥ न कर्म सर्व कर्म पुनरो जन्म विन्दते ॥
अर्जुन उवाच ॥ काम क्रोधं जालोभं ध्रुम माया तथैव च ॥
पते मनसि वं तं ते कर्म नास्ते कथं हरे ॥ श्री भगवान् उवाच ॥

CMTS.

5

10

15

20

25

15

भगि वृज्जिगिदहेते कर्म पुन कर्म न लिपेते ॥ निर्मलं मानसं कृत्वा
 पुन जन्म न विदेत्य ॥ ६ ॥ अर्जुन उवाच ॥ मया सा पुराण पापानि तानि
 अशुचि सुचये सदा ॥ एते मनसि वर्तन्ते कर्म नास्ति कथं हि
 ॥ ७ ॥ श्री भगवान उवाच ॥ एतत्सर्व कृतं कर्म विष्णु सर्वमप्य
 वेत् ॥ संकल्पं च विकल्पं च नास्ति जन्म न विदेत्य ॥ ८ ॥ अर्जु

10

5

भवेत्
 वेते ॥ केन कर्म सुबुद्धि च दुर्बुद्धि जना दनं ॥ ६ ॥ श्री भगवान उवा
 च ॥ पूर्व कर्म सुलभ्यते राज कर्म सुजोगिना म ॥ पूर्व कर्म सु
 मत्तु न्वा कर्म नास्ति स वा र्जुन ॥ ७ ॥ ललाते लिखिते कर्म
 ते भवेति यथा सुषम् ॥ सुष दुष भवे चैव अग्रे अग्रे च धाव
 ति ॥ ८ ॥ अर्जुन उवाच ॥ देव लोक मनुष्यानां मुनि मंधार्वयो

0

centimeter 5

10

15

20

15

भक्ति गिना कर्म बुवं धिनी लये त्रिकर्म केन के लव ॥ श्री भगवान उ
 वाच ॥ त्रिकर्म त्रिरंजनं देव सर्वदा येन पुनितं ॥ न पुनरासं जथा जार्थ राम
 ॥ १७ ॥ यथा क्षिर द्युता मयम् ॥ १८ ॥ अर्जुन उवाच ॥ चतुरस्र लिलक्ष जि ॥ १९ ॥
 वात्मा जलस्थल प्रपुनितम् ॥ मनोरथं सर्वतात्मा प्रकृतिस्तले
 किं भवेत् ॥ २० ॥ श्री भगवान उवाच ॥ चतुरस्र लिलक्ष जिवात्मा वा

10

5

लकेन कर्म न लिप्यते ॥ तं लव भुवनं देव प्रसादं कुरु के लव ॥ २१ ॥
 श्री भगवान उवाच ॥ मनश्च मन कर्ता मत्तं तिलयत्मा ॥ मनो हं
 काम लिप्य च मन कर्म न लिप्यते ॥ २२ ॥ मनो धर्ति मनो का स मन
 सक्ति मन लिव ॥ मनो भान मनश्च मनश्च मातृ ॥ २३ ॥
 मन पुनं मन काज मन कर्म कल वि प्र ॥ मनो हर्ष मनो दुषं मनो

0

centimeter 5

10

15

20

15

४मसंभवेत्

भोगि भोगि पुरंदर ॥ ५ ॥ मनसा वा मन मोह मनतुषा भुवत्तदा ॥
 मन कासं मन जोधो मनो मानां मन नयो ॥ ६ ॥ मनो योगि ॥ ३० ॥
 मनो भोगि मन कर्ता च इन्द्र ॥ मनो जाली च नोच मनो धर्म ॥ ३० ॥
 अधर्म कर्म ॥ ७ ॥ एकजिवे बुद्धि वरु जिव च जायते ॥ तत्प्राप्तं
 कं मन पार्थ वरु वर्तमान कारयेत् ॥ ८ ॥ साध्वं दिते दोषा

0

5

३०

न साध्वं परागति ॥ ९ ॥ अर्जुन उवाच ॥ कथं जिवेत् ॥ ३० ॥
 थं भुजं नोदत ॥ कथं पुनं कथं पाप कथं कर्म न लिप्यते ॥
 १० ॥ श्री भगवानुवाच ॥ अयं जिव भयं कां भयं मृत्युं
 अर्जुन ॥ अयं भुजं भयं पापं स्वयं कर्म न लिप्यते ॥ ११ ॥ अर्जुन
 न उवाच ॥ को कल्पं दिते ते दानं को कल्पं च प्रतिग्रहं ॥ १२ ॥

0

centimeter 5

10

15

20

15

भक्ति भोग कते वैव को वा दुखं व भुंजते ॥१२॥ श्री भगवान उवाच ॥
 स्वयं दाता स्वयं याति स्वयं भोग करिष्याति ॥ भुंजते च स्वयं दु
 ॥१३॥ स्वनिर्मलं शृणु चार्जुन ॥१३॥ अर्जुन उवाच ॥ कथं शुभं मे भुं ॥१३॥
 न्यं च कथं शिख्यते मे न ॥ कथं धेयं संक्षेपे ईदं बुद्धिजनार्दन ॥
 १४ ॥ इति श्री कृष्णार्जुनसंवादे बुद्धिज्ञाने तत्त्वकोटौ नवमोऽध्यायः

01

02

मो ध्याय ॥ अर्जुन उवाच ॥ बुद्धिज्ञानं नराणां न कथयं दुर्लभं
 भवेत् ॥ कर्तव्यं च साक्षा बोध भक्तिनिर्वाण कं हरि ॥ ११ ॥ ज्ञान
 जज्ञतथा मिथं वर्तते वल्लभ कृपा ॥ वेदसास्त्रस्मृतिलोकः
 निर्वाणं च कथं हरि ॥ २ ॥ श्री भगवान उवाच ॥ ज्ञानदानं
 कृता ज्ञायं वृत्त दुःखादित्रिक्रिया ॥ हरिभक्तिविनाकार्थस्य

0 centimeter 5 10 15 20

15

भक्ति सर्वकर्मनिरर्थकम् ॥३॥ नानादेवक्रियापूजानां कर्मक
 रोतिप ॥ मनोभक्तिविना पार्थ सर्वकर्मनिरर्थकम् ॥४॥ राज
 ॥२२॥ आचारं क्रियते कोतिदानं दत्वा हयागजा ॥ आत्मतत्त्वं न जा ॥२३॥
 नाति सर्वकर्मनिरर्थकम् ॥५॥ कोटि कोटि कृतयज्ञदा
 नं कोतिगजा हसम् ॥ गोदानं वसह श्रेय भक्तिर्नाम हरि

10

5

विना ॥६॥ कोतिजन्म कृतं वा यं पुनर्येन हरिस्मृतं ॥ सर्वपा
 यं पुनासत विष्णुलोके सगच्छति ॥७॥ विष्णुस्मात्तु गोह
 त्यायं ह्यहं बालघातकम् ॥ भजते विष्णुपदं पार्थ विष्णुलोके
 सगच्छति ॥८॥ न चिन्ते विरते मुखा न भवन्त पदार्थकम् ॥ गुमा
 मे बुद्धिरतापान नरके जायते सदा ॥ न सुखा निचदुखा निवि

0

centimeter 5

10

15

20

मणि स्यात्सर्वतोहरित् ॥ वरद्वल्लभरतं त्वं यो दुःखानि कदां च न तम
 ॥१०॥ आत्मतत्त्वं मत्ता देवं योगतत्त्वं निजं नम ॥ तत्त्वयोग
 ॥१३॥ निराकारं तत्त्वयोगि निराश्रयं ॥११॥ तत्त्वनिरंजनं वल्लभ ॥१३॥
 त्वनारिषतिबुता ॥ तत्त्वसुत्रमिता भगति तत्त्वयोगि जितेन्द्र
 सं ॥१२॥ तत्त्वलिङ्गा मुहभक्ति तत्त्वदेवो निरंजनम् ॥१३॥

मीतिवर्णि
 ॥१५॥
 (कै जन्म व्युत्पत्ति)

15

10

5

0

centimeter 5

10

15

20

